“Si tú me olvidas” de Pablo Neruda

traducido por Nupur Manasi

SI TÚ ME OLVIDAS

QUIERO que sepas
una cosa.

Tú sabes cómo es esto:
si miro
la luna de cristal, la rama roja
del lento otoño en mi ventana,
si toco
junto al fuego
la impalpable ceniza
o el arrugado cuerpo de la leña,
todo me lleva a ti,
como si todo lo que existe,
aromas, luz, metales,
fueran pequeños barcos que navegan
hacia las islas tuyas que me aguardan.

Ahora bien,
si poco a poco dejas de quererme
dejaré de quererte poco a poco.

Si de pronto
me olvidas
no me busques,
que ya te habré olvidado.

Si consideras largo y loco
el viento de banderas
que pasa por mi vida
y te decides
a dejarme a la orilla
del corazón en que tengo raíces,
piensa
que en ese día,
a esa hora
levantaré los brazos
y saldrán mis raíces
a buscar otra tierra.

Pero
si cada día,
cada hora
sientes que a mí estás destinada
con dulzura implacable.
Si cada día sube
una flor a tus labios a buscarme,
ay amor mío, ay mía,
en mí todo ese fuego se repite,
en mí nada se apaga ni se olvida,
mi amor se nutre de tu amor, amada,
y mientras vivas estará en tus brazos
sin salir de los míos.

अगर तुम मुझे भूल जाओ

मै चाहता हूँ कि तुम ये जान लो

तुम जानो कि कैसी हैं ये चीज़ें:
अगर मैं देखता हूँ
अपनी खिड़की से गुज़रती,
शीशे की चंद्रमा, हल्की पतझड़ की लाल टहनी
अगर मैं छूता हूँ
आग के साथ पड़ी
अगोचर राख़
या लकड़ी का सिकुड़ा हुआ शरीर,
ये सब मुझे तुम तक ले आती है,
जैसे कि इस जहाँ की सारी चीजें,
सुगंध, रौशनी, पत्थर के टुकड़े,
मेरा इन्जार करते, तुम्हारी द्वीपों
की ओर जाते, छोटे-छोटे नाव हों ।

हाँ अब,
अगर धीरे-धीरे तुम मुझे चाहना छोङ देती हो
मैं भी तुम्हे चाहना छोङ दूँगा, धीरे-धीरे।

अगर कहीं
तुम मुझे भूल जाओ
तो ढूँढना नहीं मुझे,
क्योंकि मैं भी तुम्हे भूल चुका होऊँगा।

अगर तुम मेरे जीवन से गुज़रती
रंगों के बयार को
कठिन और उन्मत्त समझती हो
और मन बना लेती हो
मुझे छोड़ने का
उस दिल के किनारे पर, जहाँ मैं बसता हूँ,
तो सोच लेना
कि उसी दिन,
उसी वक्त
मैं अपनी बाँहें हटा लूँगा
और मेरी जड़ें चली जाएँगी
किसी दूसरे किनारे की तलाश में।

लेकिन
अगर हर रोज़
हर घड़ी
कठोरचित मधुरता के साथ तुम
ये महसूस करती हो कि तुम मेरे लिए बनी हो । अगर हर रोज़ एक फूल
तुम्हारे होठों तक जाकर मुझे ढूँढता हो,
ऐ मेरी मोहब्बत, ऐ मेरी ही,
वो सारी आग मुझमें दोहरा जाती है,
मुझमें ना तो कुछ ख़त्म होती है, ना ही भूलती,
मेरी मोहब्बत तुम्हारे प्यार से पलती है, प्रेयसी,
और जब तक वो जीवित है, तुम्हारी बाँहों में रहेगी बिना मेरी बाँहों को छोड़े।